कड़ा रुख अपनाने का दबाव

यूरोप की ओर से भारत पर रूस के प्रति कड़ा रुख अपनाने का दबाव पड़ रहा है। यूरोप में फ्रांस भारत का करीबी सहयोगी है। वह चाहता है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत रूस के प्रति कड़ा रुख अपनाए क्योंकि रूस ने कथित तौर पर संयुक्त राष्ट्र के चार्टर का उल्लंघन किया है।

आरती सिंह।।

यूक्रेन और रूस की सेनाओं के बीच जंग शुरू होने के बाद इसके लंबा खिंचने का डर जताया जा रहा है। इस बीच खासतौर पर यूरोप की ओर से भारत पर रूस के प्रति कड़ा रुख अपनाने का दबाव पड़ रहा है। यूरोप में फ्रांस भारत का करीबी सहयोगी है। वह चाहता है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत रूस के प्रति कड़ा रुख अपनाए क्योंकि रूस ने कथित तौर पर संयुक्त राष्ट्र के चार्टर का उल्लंघन किया है। उसने एक संप्रभु देश पर हमला बोला है। फ्रांस ने कहा है कि यूक्रेन पर रूस के हमले से यूरोप में जो अस्थिरता की स्थिति बनी है, वह भारत के लिए ठीक नहीं होगी। इसी मामले में ईयू के विदेश मामलों के प्रतिनिधि जोसेफ बोरेल ने भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर को भी फोन किया और दोनों के बीच यूक्रेन में गंभीर स्थिति को लेकर चर्चा हुई। उनके बीच यह भी बातचीत हुई कि भारत किस तरह से इस टकराव को खत्म करने में भूमिका निभा सकता है। हाल ही में जयशंकर फ्रांस की यात्रा पर गए थे। वहां भी उन्होंने एक तरह से रूस का ही पक्ष लिया था। जयशंकर ने कहा था कि रूस के आसपास के देशों में नाटो के विस्तार की चिंता जायज है। उसके बाद भी भारत ने रूस के कदमों की आलोचना नहीं की है।

इस संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पूतिन के बीच गुरुवार को हुई बातचीत भी मायने रखती है। इसमें पूतिन ने प्रधानमंत्री को ताजा स्थिति के बारे में जानकारी दी। इसमें भी प्रधानमंत्री ने पूतिन से तत्काल युद्धविराम करने और बातचीत के जरिए विवाद सुलझाने की अपील की। असल में इस पूरे मामले में भारत बेहद मुश्किल स्थिति में है। एक तरफ वह अमेरिका के साथ हिंद–प्रशांत क्षेत्र के लिए बने क्वाड जैसे संगठन का अहम मेंबर है। यह संगठन चीन की विस्तारवादी नीतियों को रोकने के मकसद से बनाया गया है।

वास्तविक नियंत्रण रेखा को लेकर चीन ने भारत के खिलाफ इधर आक्रामकता अख्तियार की है। भारत को लगता है कि चीन को रोकने में क्वाड से मदद मिलेगी। दूसरी तरफ रूस उसकी सामरिक तैयारियों के लिहाज से महत्वपूर्ण सहयोगी है। भारत को 60 फीसदी हथियारों की आपूर्ति रूस से ही होती है। इसलिए वह रूस को भी नाराज नहीं करना चाहता क्योंकि इससे भारत की रक्षा तैयारियों पर बुरा असर पड़ेगा। इसलिए यूक्रेन मामले में भारत के लिए संतुलन बनाए रखना जरूरी है। उसे अमेरिका, फ्रांस और दूसरे यूरोपीय सहयोगियों के साथ रूस की भी जरूरत है। यही भारत के लिए सबसे बड़ा इम्तहान भी है और एक अवसर भी। अगर वह यूक्रेन में युद्ध रोकने के लिए कूटनीतिक पहल में मदद कर पाता है और वह पहल कामयाब होती है तो इससे वैश्विक समुदाय के बीच उसका कद बढ़ेगा और भारत के हित भी सुरक्षित रहेंगे।

पूर्व–दार्शनिक

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

दार्शनिक चिंतन की शुरुआत से पहले, ज्ञान, जो इंद्रियों और कल्पना के माध्यम से माना जाता था, का एक मिश्रण की विशेषता पूर्व–दार्शनिक प्रवाह मौजूद था। इस वर्तमान के अग्रदूतों को राष्ट्रपति पद के विचारकों के रूप में जाना जाता है। प्रेस्कोक्रेटिक्स ने दुनिया में एक नए प्रकार के ज्ञान का परिचय दिया। वे 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में अचानक दिखाई दिए। बुद्धिमान लोगों के रूप में जो अपने आस–पास हुई हर चीज का स्पष्टीकरण चाहते थे। इन विचारकों का मुख्य उद्देश्य यह जानने के लिए ज्ञान की खोज था कि वे सोफिस्ट किसे कहते हैं, एक शब्द जो ग्रीक से होना चाहिए ष्सोफिया"और ज्ञान का क्या अर्थ है। रेट्रोस्पेक्ट में, यह स्पष्ट है कि उनके शोध ने दर्शन के रूप में जल्द ही जाने के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

संपादकीय

सब जुड़ेंगे, तभी बचेंगे

बिना राजनीतिक इच्छाशक्ति के हम इस समस्या को हल नहीं कर सकते। अब किंतु–परंतु या सवाल का समय नहीं है। नए कानून बनाने पड़ेंगे, नई नीतियां भी, ताकि सब मिलजुल कर काम कर सकें। ग्रीन हाउस गैसों को कम करना ही बेहतर रास्ता है। क्योंकि तापमान अगर डेढ़ डिग्री तक बढ़ा, तो फिर जो कुछ भी सामने आएगा, उसे हम मैनेज नहीं कर पाएंगे। आठवां निष्कर्ष अच्छी विकास प्रथाओं के बारे में है। रिपोर्ट का कहना है कि मुश्किल इसलिए भी आ रही है क्योंकि हमारी नीतियां और उनका क्रियान्वयन टिकाऊ नहीं है। जितना चाहते हैं, जमीन घेर लेते हैं, पानी या कोयला निकाल लेते हैं, जंगल काट डालते हैं। प्रदूषण अलग बढ़ा रहे हैं। इसकी जगह हमें अच्छी विकास प्रथाएं लागू करनी होंगी। जैसे कि शहर में बाढ़ कम करनी है तो शहर के ताल–तलैया और नदियां पुनर्जीवित करिए। शहर में ऐसी जगहें हों, जहां कोई निर्माण ना हो। गांवों में भी सूखा कम करना है तो वर्षा जल संचयन और मिट्टी की नमी सहेजनी होगी। कंपनियों और सिविल सोसायटी का बहुत बड़ा रोल होगा, क्योंकि अब ये सिर्फ सरकारों के बस की बात नहीं। सब लोग जुड़ेंगे, तभी जलवायु परिवर्तन के प्रभाव कुछ कम हो सकते हैं।

चर्चा इसलिए क्योंकि इसे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और अनुकूलन पर सबसे व्यापक रिपोर्ट माना जा रहा है। इस लेख में हम इस रिपोर्ट से निकली दस जरूरी चीजों पर चर्चा करेंगे।

यह कैसा विकास

चंद्रभूषण।।

इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) सन 1988 में इसलिए बना, ताकि वह समय–समय पर जलवायु परिवर्तन के बारे में दुनिया के शीर्ष नेताओं को साइंटिफिक नजरिया दे सके। पिछले 34 सालों में आईपीसीसी ने पांच रिपोर्ट जारी की हैं और अब वह छठी रिपोर्ट पब्लिश कर रहा है। इस रिपोर्ट का दूसरा हिस्सा कुछ दिन पहले आया है, जिसकी इन दिनों काफी चर्चा हो रही है। चर्चा इसलिए क्योंकि इसे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और अनुकूलन पर सबसे व्यापक रिपोर्ट माना जा रहा है। इस लेख में हम इस रिपोर्ट से निकली दस जरूरी चीजों पर चर्चा करेंगे।

आईपीसीसी की छठी रिपोर्ट का पहला निष्कर्ष यह है कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पिछली पांच रिपोर्टों में बताई चेतावनियों से कहीं ज्यादा है और संकट के अनुकूल हो पाना हमारी सोच से भी अधिक कठिन होगा। दूसरी खोज यह है कि जलवायु परिवर्तन अब प्रकृति का विनाश कर रहा है। जमीन या समुद्र में जो जीव–जंतु या पेड़–पौधे हैं, उन्हें इतना ज्यादा नुकसान हो चुका है कि कहीं–कहीं तो इसकी भरपाई ही नहीं हो सकती। सैकड़ों विलुप्त जीव–जंतु अब कभी वापस नहीं आएंगे। रिपोर्ट कहती है कि अगर तापमान 1.5 डिग्री से ज्यादा बढ़ा तो ऐसी

चीजें होंगी, जिन्हें हम सैकड़ों सालों में भी ठीक नहीं कर पाएंगे। समुद्र में मूंगों की चट्टानें खराब हो जाएंगी। सुंदरवन जैसी जगहें बर्बाद हो जाएंगी। हमारे नॉर्थ–ईस्ट और वेस्टर्न घाट पर जो वर्षा वन हैं, वे तबाह हो जाएंगे। हिमालय के ग्लेशियर और इको सिस्टम ऐसे खराब होंगे कि फिर कभी रिकवर नहीं कर पाएंगे।

तीसरा निष्कर्ष यह है कि जलवायु परिवर्तन अब इंसानों की सेहत, शांति और संपदा पर प्रभाव डाल रहा है। इसने दुनिया भर में लोगों के शारीरिक और कुछ क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। जल जनित और वेक्टर जनित रोगों की घटनाओं में वृद्धि हुई है। हृदय और सांस की बीमारियां भी बढ़ गई हैं। अत्यधिक गर्मी, बाढ़ और अन्य चरम मौसम की घटनाओं के कारण दुनिया भर में लोगों की मौतें हो रही हैं। जलवायु परिवर्तन गरीब को और गरीब बना रहा है। घर के बाहर मेहनत–मजदूरी करना गरीब की जीविका है। भीषण गर्मी ने उनके काम के घंटे घटा दिए हैं, जो आगे और भी कम होंगे और उसी हिसाब से उनकी आय घटती जाएगी। इसी तरह, जलवायु परिवर्तन से सबसे ज्यादा आर्थिक नुकसान कृषि, वानिकी, मत्स्य पालन, ऊर्जा और पर्यटन में होगा, जो गरीबों को सबसे अधिक रोजगार देता है। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन सभी क्षेत्रों में विस्थापन को बढ़ावा देकर मानवीय संकट को बढ़ा रहा है। धीरे–धीरे ऐसे सबूत सामने आ रहे हैं कि ग्लोबल वॉर्मिंग पानी और उपजाऊ भूमि जैसे संसाधनों की कमी पैदा करके संघर्षों में इजाफा कर सकती है।

चौथा निष्कर्ष है कि इससे भारत जैसे देश सबसे बुरी तरह प्रभावित होंगे। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव हर जगह समान नहीं होगा। सबसे ज्यादा प्रभाव वहां होगा, जहां गरीबी और शासन की चुनौतियां हैं, छोटे किसान ज्यादा हैं, लोगों की आवश्यक सेवाओं और संसाधनों तक पहुंच कम है। रिपोर्ट कहती है कि विश्व के 330 से 360 करोड़ लोग जलवायु परिवर्तन से अत्यधिक प्रभावित क्षेत्रों में रहते हैं। भारत को लेकर अलग से इसमें कोई आंकड़ा नहीं दिया गया है, लेकिन साफ दिख रहा है कि भारत सबसे बुरी तरह से प्रभावित है।

सूडोकु नवताल-5410

सरल

7	8	6		1		5		2
	9			8				3
1			6	9		7		
	3	8	2		1			
2	7	5				6	3	1
			5		7	2	8	
		9		7	4			6
8				2			5	
4		2		5		9	1	7

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5409 का हल

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	5	9	6	3	2	1
5	7	4	1	6	2	8	3	9
1	3	6	9	4	8	5	7	2
9	8	2	7	3	5	1	4	6
6	2	8	4	7	1	9	5	3
4	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	9	8	5	3	2	6	4

अपना ब्लॉग

शहरों में हीटवेव और बाढ़ की समस्या बढ़ेगी

मोहन। अफ्रीका और एशिया में तेजी से विकसित होते शहरों में हीटवेव और बाढ़ की समस्या बढ़ेगी, पीने के पानी की कमी होगी। छठी खोज यह है कि अब हम वहां पहुंच रहे हैं, जहां से वापसी मुश्किल है। अब जलवायु परिवर्तन इतना जटिल हो चुका है कि उसे सही कर पाना कठिन होता जा रहा है। जलवायु से जुड़े कई खतरे एक साथ आएंगे। कई जलवायु और गैर–जलवायु जोखिम आपस में क्रिया–प्रतिक्रिया करेंगे, जिससे असहनीय स्थिति पैदा होगी। उदाहरण के लिए, भारत के विभिन्न हिस्सों में बाढ़, सूखा, जंगल की आग और गर्मी की लहरें जैसी स्थिति एक साथ आ सकती हैं, जो जटिल समस्याएं पैदा करेंगी। नौंवी और इस रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अब आप प्रकृति को अकेला छोड़ दीजिए, इसी में आपकी भलाई है। अभी विश्व में हम लगभग 15 फीसदी जमीन, 21 फीसदी मीठे पानी के स्रोत और 8 फीसदी समुद्र संरक्षण करते हैं। रिपोर्ट का कहना है कि बचने के लिए अब हमें 30 से 50 फीसदी जमीन, फ्रेश वॉटर और समुद्र को छोड़ देना पड़ेगा।